भारतीय शिक्षा नीति-२०२०

अध्यापक एवं शिक्षा

डॉ. प्रकाश चन्द्र पन्त 'दीप'

इस पुस्तक मे व्यक्त विचार लेखक/लेखिका/सपादक के व्यक्तिगत है। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

ISBN : 978-93-89043-95-2

प्रकाशक-

सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस

एन-3/25, मोहन गार्डन, उत्तम नगर,

नई दिल्ली-110059 (भारत)

दूरभाष : +91-7042082850, 9899665801

E-mail: satyampub_2006@yahoo.com

भारतीय शिक्षा नीति-2020 एवं अध्यापक शिक्षा

प्रथम संस्करण : 2021

© सुरक्षित

प्रस्तुत पुस्तक का किसी भी रूप में लेखक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना मुद्रण, वितरण एवं पुनः प्रकाशन करना कानूनन अपराध है तथा ऐसा करने पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

भारत में प्रकाशित-

श्री आर. डी. पाण्डेय द्वारा **'सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस'** के लिए प्रकाशित। एस॰ के॰ ग्राफिक्स, नई दिल्ली द्वारा लेजर टाईपसेटिंग तथा विशाल कौशिक प्रिन्टर्स, शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

चतुर्थ अध्याय
अध्यापक शिक्षा की समस्याएँ तथा समाधान

1. अध्यापक शिक्षा की समस्याएँ तथा समाधान — 141
—डॉ० मुकेश चन्द जोशी
2. अध्यापक शिक्षा की समस्यायें तथा समाधान — 149
—डॉ० अखलेश कुमार मीना
3. अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में समस्याएँ तथा समाधान — 157
—डॉ० विचारीलाल मीना
4. भारत में अध्यापक शिक्षा : समस्याएँ तथा समाधान — 167
—प्रो० भीमा मनराल, अशोक उप्रेती

पञ्चम अध्याय
कोविड काल में अध्यापक शिक्षा

1. महामारी काल में शिक्षक-प्रशिक्षकों के समक्ष शिक्षक शिक्षा की चुनौतियाँ — 181
—डॉ० रश्मि चौधरी
2. कोरोना कालः अध्यापक शिक्षा में नवीन चुनौतियाँ एवं अवसर — 191
—डॉ० प्रकाश चन्द्र पन्त
3. शिक्षण-प्रशिक्षण व्यवस्था पर कोविड-19 का प्रभाव — 208
—डॉ० सुमन प्रसाद भट्ट

षष्ठ अध्याय
शिक्षा नीति-2020 व अध्यापक शिक्षा

1. ईक्कीसवीं सदी की नई शिक्षा नीति में शिक्षक-शिक्षार्थी — 223
—डॉ० लक्ष्मण कुमार
2. राष्ट्र निर्माण में अध्यापक शिक्षा व शिक्षा नीति-2020 — 230
—डॉ० डम्बरुधर पति

सप्तम अध्याय
अध्यापक-शिक्षा में जनसंख्या शिक्षा

1 अध्यापक शिक्षा में जनसंख्या शिक्षा का समन्वय — 243
—डॉ० प्रकाश चन्द्र पन्त

3

अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में समस्याएँ तथा समाधान

डॉ० विचारीलाल मीना*

भूमिका

शिक्षा मानव जीवन का अभिन्न अंग है यह मानव के विकास की प्रक्रिया है, निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। मनुष्य प्रत्येक परिस्थिति में कुछ न कुछ अवश्य सीखता हैं। शिक्षा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास करती है। एवं समाज के सम्पूर्ण विकास की आधारशिला भी है। शिक्षा ही मनुष्य का निर्माण करके उसे व्यवहार योग्य बनाती है। शिक्षा के द्वारा विद्यालय, जो समाज का लघु प्रतिबिम्ब हैं इस प्रकार का वातावरण प्रस्तुत करते हैं, जहाँ राष्टं के भविष्य का निर्माण होता है। इस निर्माण कार्य को सुस्थिर दिशा प्रदान करने का कार्य शिक्षकों का है जो इस दायित्व का निर्वहन अतिसरलता से करते हैं। और इस निर्माण कार्य के लिए शिक्षकों को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के समान माना जाता है—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

अध्यापकों के द्वारा प्रदत्त शिक्षा ही गुणवत्ता का अनिवार्य अंग है। एच-जी-वेल ने भी कहा है कि 'अध्यापक इतिहास निर्माता है। राष्ट का इतिहास विद्यालयों में लिखा जाता हैं और विद्यालय अध्यापकों की गुणवत्ता से अलग नहीं हो सकते हैं।'

प्रो० दौलतराम कौठारी आयोग 1964-66 के अनुसार 'भारत के भाग्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है।'

संस्कृतविश्वविद्यालय-ग्रन्थमालायाः 116 पुष्पम्

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम : समीक्षात्मक विश्लेषण

(शिक्षा संकाय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी)

(Seminar Proceeding)

8-9 मार्च, 2018

प्रधान सम्पादक

प्रो. मुरलीमनोहर पाठक

कुलपति

सम्पादक

प्रो. रमेश प्रसाद पाठक

प्रो. सदन सिंह

प्रो. रचना वर्मा मोहन

सम्पादक मण्डल

डॉ. विचारी लाल मीणा

डॉ. पिंकी मलिक

डॉ. परमेश कुमार शर्मा

डॉ. आरती शर्मा

शोध-प्रकाशनविभागः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

नवदेहली-110016

प्रकाशकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीनः

प्रकाशनवर्षम् : 2022

ISBN : 81-87987-93-6

मूल्यम् : ₹ 300.00

मुद्रकः

डी.वी. प्रिन्टर्स

97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली-110007

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
	प्ररोचना	iii
	सम्पादकीय	v
	प्रतिवेदन	vii
	संस्कृत	
1.	अध्यापकशिक्षायां नवाचारात्मकाभ्यासाः –प्रो. सन्तोषमित्तल	1
	हिन्दी	
2.	अध्यापक-शिक्षा कार्यक्रम में नवाचारी अभ्यास –प्रो. विमलेश शर्मा	10
3.	अध्यापक शिक्षा में नवाचारी अभ्यास –डॉ. विचारी लाल मीना	16
4.	अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की प्रभाविता एवं नवाचारी अभ्यास –डॉ. सविता राय	24
5.	अध्यापकशिक्षा पाठ्यचर्या : भाषा शिक्षणशास्त्र –डॉ. सुरेन्द्र महतो	34
6.	अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम की गुणवत्ता में चुनौतियाँ –डॉ. प्रेमसिंह सिकरवार	43

अध्यापक शिक्षा में नवाचारी अभ्यास

–डॉ. विचारी लाल मीना

सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्री.ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ, नई दिल्ली

भूमिका–

शिक्षा मानव जीवन का अभिन्न अंग है यह विकास की प्रक्रिया है। मनुष्य प्रत्येक परिस्थिति में कुछ न कुछ अवश्य सीखता है। शिक्षा ही मनुष्य का सर्वाङ्गीण विकास करती है। समाज के विकास की आधारशिला भी है। यह शिक्षा मानव का निर्माण कर उसे व्यवहार योग्य बनाती है। शिक्षा के द्वारा ही अन्तर्निहित गुणों का विकास सम्भव है। इस विकास के लिए विद्यालय जो लघु समाज का प्रतिबिम्ब है इस प्रकार का वातावरण प्रस्तुत करते हैं जहाँ राष्ट्र के भविष्य का निर्माण होता है। और इस निर्माण कार्य को सुस्थिर दिशा प्रदान करने का कार्य शिक्षकों का है। जो इस दायित्व का निर्वाह सरलता से करते हैं। इस निर्माण कार्य के लिए ही शिक्षकों को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के समान माना जाता है-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

प्रो. दौलतराम कोठारी आयोग 1964-66 के अनुसार– **"भारत के भाग्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा हैं।"**

यह सामान्य तथ्य है कि दिन प्रतिदिन तीव्रता के साथ ज्ञान में वृद्धि होती जा रही है। प्रत्येक क्षेत्र में नये विचार, तथ्य, सिद्धान्त, नियम, विधियाँ तथा तकनीकी का समावेश सूचनाओं के क्षेत्र को विस्तृत कर रहा है।

संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रन्थमाला का 114 पुष्प

अध्यापक शिक्षा के संवर्धन में कौशल विकास : प्रासंगिकता एवं चुनौतियाँ

शिक्षा संकाय द्वारा आयोजित संगोष्ठी-कार्यवृत्त

(Seminar Proceeding)

28-29 मार्च, 2017

प्रधान सम्पादक

प्रो. मुरली मनोहर पाठक

कुलपति

सम्पादक

प्रो. रमेश प्रसाद पाठक

प्रो. सदन सिंह

प्रो. रचना वर्मा मोहन

सम्पादक मण्डल

1. डॉ. सुरेश महतो
2. डॉ. प्रेमसिंह सिकरवार
3. डॉ. शिवदत्त आर्य
4. डॉ. जितेन्द्र कुमार

शोध-प्रकाशन-विभाग:

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय:

नवदेहली-110016

प्रकाशकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीनः

प्रकाशनवर्षम् : 2022

ISBN : 81-87987-91-X

मूल्यम् : ₹ 325.00

मुद्रकः

डी.वी. प्रिन्टर्स

97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली-110007

7.	संस्कृत साहित्य एवं नेतृत्व कौशल –डॉ. सुरेन्द्र महतो	46
8.	नेतृत्व शैली हेतु कौशल विकास –डॉ. शिवदत्त आर्य	53
9.	अध्यापक शिक्षा में कौशल विकास के लिए शिक्षा नीतियों की भूमिका –डॉ. प्रेमसिंह सिकरवार	58
10.	अध्यापक शिक्षा में कौशल विकास –डॉ. विचारी लाल मीणा	69
11.	अध्यापन में सम्प्रेषण-कौशल का महत्त्व –डॉ. प्रदीप कुमार झा	83
12.	अध्यापक शिक्षा के संवर्धन में कौशल विकास : प्रासंगिकता एवं चुनौतियाँ –श्रीमती रेखा चौधरी	86
13.	शिक्षण शास्त्र में कौशल विकास –नवीन आर्य	94
14.	सम्प्रेषण कौशल विकास-विधियाँ एवं व्यूह रचनाएँ –विजय कुमार झा	101
15.	सम्प्रेषण कौशल विकास : भाषा-शिक्षण में उपयोगी –कालीशंकर मिश्र	108
16.	शिक्षणशास्त्र में कौशल विकास –प्रभाकर	114
17.	शिक्षणशास्त्र में कौशल विकास –सन्तोष कुमार काण्डपाल	127
18.	सम्प्रेषण कौशल विकास तथा व्यूह रचनाएँ –देवेश शर्मा	138

अध्यापक शिक्षा में कौशल विकास

–डॉ. विचारी लाल मीना

सहायकाचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग,

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, नवदेहली

प्रस्तावना–

वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक शिक्षा का स्थान सर्वोपरि है। यदि वैदिककाल के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो विदित होता है कि अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए कोई प्रक्रिया उपलब्ध नहीं थी। ऐसा माना जाता था कि शिक्षक जन्मजात होते हैं। वर्तमान में यह प्रक्रिया परिवर्तित हो गई क्योंकि स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त असंख्य प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना हुई। जिनका मुख्य उद्देश्य अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करना है। तथा शिक्षक जन्मजात ही नहीं होते अपितु प्रशिक्षण संस्थानों में छात्रों को प्रशिक्षण प्रदान करके उनमें अध्यापक योग्य कौशलों, क्षमताओं, योग्यताओं का विकास किया जा सकता है।

शिक्षण कौशल–

शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक को अनेक कार्य एक साथ करने पड़ते है जैसे- लिखना, प्रश्न पूछना, स्पष्ट करना प्रदर्शन करना आदि। इसलिए इसे क्रियाओं का संकुल कहा जाता है। अध्यापक का कार्य विद्यार्थियों को इन क्रियाओं में संलग्न करना है। ये शिक्षण कौशल काफी तकनीकियुक्त और परिश्रम पूर्ण होते हैं। इन शिक्षण कौशलों की प्रकृति एक जैसी नहीं होती इनमें निहित शिक्षण व्यवहारों में भी काफी अन्तर पाया जाता है। इसलिए उन सभी का अभ्यास और उन्हें विकसित करने की प्रक्रिया में अन्तर पाया जाना स्वाभाविक ही है। वास्तव में